शाकटायन

शाकटायन नाम के दो व्यक्ति हुए हैं, जिनमें एक वैदिक काल के अन्तिम चरण के वैयाकरण तथा दूसरे 9वीं शताब्दी के अमोघवर्ष नृपतुंग के शासनकाल के वैयाकरण थे।

वैदिक काल के अन्तिम चरण (8वीं ईसापूर्व) के शाकटायन, संस्कृत-व्याकरण के रचयिता हैं। उनकी कृतियाँ अब उपलब्ध नहीं हैं, किन्तु यक्ष, पाणिनि एवं अन्य संस्कृत-वैयाकरणों ने उनके विचारों का सन्दर्भ दिया है।

शाकटायन का विचार था कि सभी संज्ञा शब्द अन्ततः किसी-न-किसी धातु के व्युत्पन्न हैं। संस्कृत-व्याकरण में यह प्रक्रिया कृत-प्रत्यय के रूप में उपस्थित है। पाणिनि ने इस मत को स्वीकार किया, किन्तु इस विषय में कोई आग्रह नहीं रखा और यह भी कहा कि बहुत से शब्द ऐसे भी हैं, जो लोक की बोलचाल में आ गए हैं और उनसे धातु-प्रत्यय की पकड़ नहीं की जा सकती। शाकटायनद्वारा रचित व्याकरण-शास्त्र लक्षण शास्त्र' हो सकता है, जिसमें उन्होंने भी चेतन और अचेतन-निर्माण में व्याकरण के लिंग-निर्धारण की प्रक्रिया का वर्णन किया था।